

विश्वास का निर्माण कैसे करें:

नेतृत्व में, विश्वास सबसे महत्वपूर्ण घटकों में से एक है कि आप लोगों से कैसे जुड़ते हैं। कि आपको विश्वास पर आधारित संबंध बनाने की आवश्यकता है। और स्तंभों में यह महत्वपूर्ण है कि हम विषय को बहुत ही व्यावहारिक दृष्टिकोण से देखें। आप व्यावहारिक रूप से लोगों के साथ विश्वास कैसे बनाते हैं? क्योंकि अगर लोग आप पर भरोसा करते हैं, तो आपके पास उन्हें शक्तिशाली तरीके से प्रभावित करने और निर्देशित करने की क्षमता है।

लेकिन आइए विश्वास को परिभाषित करें। विश्वास एक ऐसा विकल्प है जिसे आप चुनते हैं जहां आप सशक्त कर रहे हैं और किसी और के साथ कुछ मूल्यवान साझा कर रहे हैं, उन्हें इसके लिए जिम्मेदारी देते हैं। आप सेवकाई के एक हिस्से के साथ उन पर भरोसा कर रहे हैं। आप अपने रिश्ते के साथ उन पर भरोसा कर रहे हैं। विश्वास एक ऐसी चीज है जो आपके लिए मूल्यवान है जिसे आप दूसरों के साथ साझा करते हैं और आप उन्हें जिम्मेदारी देते हैं। यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर ने विश्वास को उस तरीके के रूप में चुना था जिससे वह हमारे साथ जुड़ना चाहते थे और वह चाहते थे कि हम उनके साथ जुड़ें। यहाँ यह इब्रानियों 11 पद 6 में क्या कहता है। विश्वास के बिना ईश्वर की स्तुति करना असंभव है।

क्या आपने कभी सोचा है कि यीशु ने चेलों को उनकी पूरी समझ होने से पहले ही, ठीक से प्रशिक्षित होने से पहले, उनकी सेवकाई में इतनी जल्दी क्यों भेजा? वह जानता था कि जब उसने उन्हें गाँवों में भेजा और वे उतने सुसज्जित नहीं थे जितना उन्हें होना चाहिए, तो उन्हें उस पर निर्भर रहना होगा। उन्हें उस पर भरोसा करना होगा और उसकी शक्ति और विश्वास का निर्माण होगा।

आपको अपने आप से यह सवाल पूछना होगा, "सेवकाई में लोगों पर मेरा नेतृत्व कैसे हो सकता है, यह कैसे बदल सकता है अगर मैं लोगों का नेतृत्व करने में परमेश्वर के विश्वास की प्राथमिकता को अपनी प्राथमिकता बनाऊँ?" अगर किसी के साथ कुछ मूल्यवान साझा करने, उन्हें जिम्मेदारी देने के लिए विश्वास मेरी पसंद है, तो अविश्वास तब होता है जब मैं उसे साझा नहीं करता। मैं जिम्मेदारी साझा नहीं करता। मैं जानकारी साझा नहीं करता। मैं इसे साझा नहीं करता क्योंकि मुझे नहीं लगता कि यह उस व्यक्ति के साथ किसी भी तरह से सुरक्षित रहेगा। और ईमानदारी से कहें, हमारा डिफ्रॉल्ट अक्सर अविश्वास होता है।

आपको एक प्रकार की स्व-सूची बनाने और यह पहचानने की आवश्यकता है कि आपके लिए वास्तव में क्या मूल्यवान है। और क्या आप इसकी रक्षा कर रहे हैं? क्योंकि आप उन लोगों पर भरोसा नहीं करते हैं जिनके साथ आपको इसे साझा करने की आवश्यकता है?

आप वास्तव में किसे बहुत महत्व देंगे और आपको विश्वास कैसे बनाने की आवश्यकता है कि आप इसे साझा कर सकें? जितना अधिक आप लोगों को आप पर भरोसा करने के लिए प्रेरित करते हैं और जितना अधिक आप लोगों पर भरोसा करते हैं, उतना ही अधिक आपका सेवकाई बढ़ सकता है। और जब विश्वास की बात आती है तो आपकी भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। और अक्सर, अगुवा अपनी भूमिका को गलत समझते हैं। एक अगुवा के रूप में, अक्सर हम सोचते हैं कि हमारी भूमिका विश्वास को मापना है। इसलिए मैं अपनी दल को देखता हूँ और उन लोगों को देखता हूँ जो मेरे सेवकाई में सेवा कर रहे हैं और मैं खुद से सवाल पूछता हूँ, "क्या मुझे उन पर भरोसा है? मैं उन पर कितना भरोसा करूँ? और हम लोगों के साथ हमारे विश्वास को माप रहे हैं।

और इसके लिए एक जगह है। लेकिन वास्तविकता यह है कि अन्य लोगों की विश्वसनीयता को मापना हमारी जिम्मेदारी नहीं है।

हमारी जिम्मेदारी है कि हम उनमें विश्वास पैदा करें। जब मैं और मेरी पत्नी अपने बच्चों की परवरिश कर रहे थे, वे छोटे थे और फिर वे बड़े हो रहे थे। एक माता-पिता के रूप में, मैं विश्वास को मापूंगा। मुझे अपने बेटे पर कितना भरोसा है? क्या मैं उसे और सामान दे सकता हूँ? क्या वह ऐसा कर सकता है? क्या वह देर रात बाहर आ सकता है? और मेरी पत्नी ने एक बार मुझे बताया, उसने कहा, "जोएल, तुम्हें पता है, मैं समझता हूँ कि हमें अपने बच्चों के विश्वास को मापना होगा। लेकिन अगर हम अपने बच्चों पर भरोसा करते हैं तो यह वास्तव में उतना मायने नहीं रखता।"

वास्तव में महत्वपूर्ण यह है कि क्या वे हम पर भरोसा करते हैं। अगर हमारे बच्चे हम पर भरोसा करते हैं, तो जब उन्हें कोई समस्या होती है, तो वे छिपते नहीं हैं। वे समाधान के लिए हमारे पास आएंगे। अगर हमारे बच्चे हम पर भरोसा करते हैं और गलती करते हैं, तो वे इसे छिपाने की कोशिश नहीं करेंगे। वे मदद के लिए हमारे पास आएंगे।

एक अगुवा यही करता है। आप केवल विश्वास को मापते नहीं हैं। आप विश्वास का निर्माण करते हैं क्योंकि यदि आपके कार्यकर्ता, आपकी दल, आपके लोग, यदि वे आप पर भरोसा करते हैं, तो वे आवश्यक होने पर आपके पास आएंगे और आप उनका नेतृत्व कर सकते हैं।

और आप एक आत्म-प्रेरक कार्य कर सकते हैं और कह सकते हैं, "मेरा अनुपात क्या है कि मैं विश्वास को कितना मापता हूँ बनाम मैं विश्वास कितना बनाता हूँ?" और यह महत्वपूर्ण सवाल बनता भी है। व्यावहारिक रूप से, आप लोगों के साथ विश्वास कैसे बनाते हैं? यीशु ने यह शानदार ढंग से किया, और हम पतरसके साथ उनके उदाहरण को देखने जा रहे हैं क्योंकि उन्होंने पतरसके साथ विश्वास बनाने में तीन साल बिताए कि पतरसउन योजनाओं और उद्देश्यों और संबंधों के लिए उस पर भरोसा करेगा जो यीशु पतरसके साथ चाहते थे। यीशु और पतरस के उदाहरण से हम जो सीखते हैं वह सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण है, आप अनुभव से विश्वास का निर्माण करते हैं। आप इसे जल्दी या केवल शब्दों के साथ नहीं बनाते हैं। आप इसे अनुभव से बनाते हैं। यीशु हमेशा पतरसके साथ काम कर रहे थे। वह पतरसको चुनौती दे रहा था। वह पतरसको काम करने के लिए आमंत्रित कर रहा था। वह अनुभव के ऐसे क्षण पैदा कर रहा था जहाँ पतरसको पता चलेगा कि यीशु वास्तव में उस पर भरोसा करता था। आप देखिए, विश्वास यह विश्वास नहीं है कि कोई व्यक्ति उस नौकरी के लिए एकदम सही है जिसे आप उन्हें देना चाहते हैं।

विश्वास एक तरह का विश्वास है कि समय उनके लिए सही है और वे एक सही काम नहीं करेंगे और वे ठोकर खा सकते हैं, लेकिन मैं उन पर भरोसा करने जा रहा हूँ और इसमें उनका मार्गदर्शन करने जा रहा हूँ। एक अगुवा के रूप में, आपको उस व्यक्ति की उस प्रक्रिया को जानने की आवश्यकता है जिसके साथ आप काम कर रहे हैं। अक्सर, हम बहुत तेज होते हैं। हम एक महान विश्वास संबंध होने से पहले बहुत अधिक जिम्मेदारी देते हैं, या हम बहुत धीमे होते हैं और हम उनकी रक्षा करते हैं और उनकी रक्षा करते हैं और उन पर भरोसा नहीं करते हैं। विश्वास का निर्माण अनुभव से होता है, सप्ताह में, सप्ताह में, महीने में, महीने में, एक इरादे के साथ जो आपके पास है, एक दृढ़ विश्वास। उनके लिए यह सही समय है। इसलिए मैं उन्हें जिम्मेदारी सौंपने और उनका मार्गदर्शन करने जा रहा हूँ। हम पतरसके साथ यीशु के उदाहरण से सीखते हैं कि विश्वास भी रिश्ते से बनता है। आप दूर से विश्वास नहीं बना सकते।

यीशु हमेशा पतरस के साथ घनिष्ठ थे। एक समय ऐसा भी था जब यीशु पतरस को, कभी-कभी जेम्स और जॉन के साथ, अन्य शिष्यों से दूर ले जाता था। उन्होंने पतरसके साथ यह घनिष्ठ संबंध बनाया जो उनके लिए एक साथ विश्वास बनाने के लिए आवश्यक था। उसके दिल में विश्वास व्यक्तिगत है। बाइबल कहती है कि विश्वास के बिना परमेश्वर को खुश करना असंभव है।

विश्वास इस तरह से संबंधपरक है। और इसलिए हम इसे एक व्यक्तिगत संबंध के माध्यम से करते हैं जहाँ हमारे पास उस तरह के संबंध के विभिन्न आयाम होते हैं। कभी-कभी यह काम के बारे में है। कभी-कभी यह परिवार की बात होती है। कभी-कभी यह हमारी अपनी व्यक्तिगत पहचान के बारे में होता है।

क्या हो सकता है यदि आप किसी पर भरोसा नहीं करते हैं, लेकिन आप उन्हें जिम्मेदारी देना चाहते हैं, नेतृत्व के तंत्र के रूप में विश्वास का उपयोग करने के बजाय, आप सभी प्रकार के नियम, नियंत्रण तंत्र बनाते हैं। मुझे पता है कि मैं यह सुनिश्चित कर सकता हूँ कि वे अच्छा काम करेंगे क्योंकि मेरे पास ये सभी नियम हैं जिनका उन्हें पालन करना है और उन्हें मुझे तीन बार रिपोर्ट करना होगा।

और यह एक शॉर्टकट है। और यह काम नहीं करता है। अंत में एक ब्रेकडाउन होगा। यदि आप विश्वास से अधिक नियंत्रण पर भरोसा कर रहे हैं, तो विश्वास अनुभव से बनता है। विश्वास संबंधों से बनता है। पतरसके साथ यीशु का रिश्ता हमें सिखाता है कि विश्वास भी हमारे शब्दों, हमारी बोली जाने वाली भाषा से बनता है। उस एक पल की कल्पना कीजिए जब यीशु पतरसके पास आया और कहा, "तुम कहते हो कि मैं कौन हूँ?" पिछली बार कब आप अपनी दल के पास गए थे और उनसे यह सवाल किया था? "आप मुझे कौन कहते हैं? मेरी सेवा करना कैसा लगता है? मेरे साथ काम करना कैसा लगता है? यीशु पतरसको एक बहुत ही विशिष्ट तरीके से संलग्न कर रहा है क्योंकि विश्वास, यह पारदर्शिता पर आधारित है। यह इस प्रामाणिकता पर आधारित है जो वहाँ है। कभी-कभी अपने शब्दों का उपयोग करने में विश्वास करना रणनीति पर आधारित होता है। एक अच्छा अगुवा कभी-कभी जानता है कि क्या कहना है और क्या नहीं कहना है। और आप ऐसा इस इरादे से करते हैं कि मैं इस व्यक्ति के साथ विश्वास कैसे बनाऊँ? और जब आप विश्वास बनाने के लिए अपने शब्दों का उपयोग कर रहे हैं तो सबसे अच्छे तरीकों में से एक यह सुनिश्चित करना है कि आप सुन रहे हैं न कि केवल बोल रहे हैं। क्योंकि जब आप सुनते हैं, जवाब देने के लिए नहीं, बल्कि जुड़ने के लिए, तो आपकी दल के सदस्यों को ऐसा लगता है कि उन्हें सुना गया है। उन्हें लगता है कि वे वास्तव में आपके लिए महत्वपूर्ण हैं। और जब आप सुनते हैं, तो आप अधिक से अधिक विश्वास बनाने के लिए अपने शब्दों का उपयोग करने में सक्षम होने के लिए सबसे अच्छी स्थिति में होते हैं, ऐसे प्रश्न पूछें जो उनके दिल को संबोधित करते हैं, उनका मन, और हाँ, उनका कौशल।

पतरस और जीसस का रिश्ता हमें यह भी सिखाता है कि विश्वास निवेश से बनता है। यह समय के साथ अनुभव से निर्मित होता है। यह संबंधपरक रूप से बनाया गया है। यह उन शब्दों से बना है जो हम बोलते हैं। हमारे शब्द विश्वास को नष्ट कर सकते हैं या वे विश्वास का निर्माण कर सकते हैं। लेकिन यह भी एक निवेश द्वारा बनाया गया है। और मैं आपको यह समझाता हूँ। शिष्यों को बुलाने और पतरसको अपने शिष्यों में से एक बनने के लिए बुलाने के साथ यीशु बहुत जानबूझकर था।

यह उनके लिए वास्तव में महत्वपूर्ण था। जब उन्होंने सर्वश्रेष्ठ लोगों को चुना तो उन्होंने उन्हें नहीं चुना। उन्हें पता था कि उनमें निवेश करने के लिए उनके पास तीन साल हैं। और जितना अधिक उन्होंने उनमें निवेश किया, उतना ही अधिक उन्होंने उन पर भरोसा किया। उस पल में जब यीशु ने उन्हें उपनाम दिए, तो मुझे आश्चर्य होता है कि उन्हें यह जानकर कैसा लगा, वाह, वह वास्तव में हमारे साथ एक करीबी दोस्ती चाहता है। और कुछ हद तक विश्वास का निर्माण हुआ।

विश्वास केवल वर्तमान के बारे में नहीं है। यह भविष्य की बात है। विश्वास बनाने में आपको अब अपनी दल के साथ क्या काम करने की आवश्यकता है ताकि अब से दो साल बाद वे उस काम के लिए तैयार रहें जो परमेश्वर चाहता है कि वे आपकी सेवकाई में करें। आप देखिए, विश्वास एक ऐसा कार्य है जो आप आज उस कार्य के लिए करते हैं जिसे आप कल पूरा होते देखना चाहते हैं।

यह भविष्य के लिए निवेश है। और इस सिद्धांत को जानना महत्वपूर्ण है क्योंकि यह आपको कुछ धैर्य और कुछ अनुग्रह प्रदान करता है ताकि जब आप लोगों के साथ काम कर रहे हों, तो आपको एहसास हो कि विश्वास रातोंरात नहीं बनता है।

और मैं उनमें निवेश करना चाहता हूँ। अक्सर नेतृत्व में, हम जो करते हैं वह यह है कि हम सबसे अच्छे लोगों को ढूँढते हैं और हम खुद को सबसे अच्छे लोगों से घेर लेते हैं ताकि वे हमारे काम को बेहतर बना सकें। यीशु ने इसके विपरीत किया।

उन्होंने ऐसे लोगों को पाया जो वास्तव में उतने कुशल नहीं थे, उतने जानकार नहीं थे। और उन्होंने उन्हें इस हद तक बेहतर बनाने के लिए खुद से घेर लिया कि एक बार उन्होंने उनसे कहा कि आप मुझसे बड़े काम करेंगे।

विश्वास किसी के साथ एक निवेश है, जो उनके लिए विश्वास करता है, उन्हें आगे बढ़ाता है, उनमें एक ऐसे भविष्य के लिए निवेश करता है जिसे वे देख भी नहीं सकते। आप देखिए, एक अगुवा के रूप में, यह पर्याप्त नहीं है कि हम केवल प्रतिनिधित्व करें।

प्रत्यायोजन तब होता है जब आप किसी को कोई कार्य देते हैं ताकि आपको इसे करने की आवश्यकता न पड़े। और इसके लिए एक जगह है। लेकिन जब हमारा सारा नेतृत्व एक प्रतिनिधिमंडल मॉडल के इर्द-गिर्द तैयार किया जाता है, तो मैं अन्य लोगों को क्या कार्य दे सकता हूँ, तो हम वास्तव में लाभ नहीं उठाते हैं और विश्वास हासिल नहीं करते हैं।

हमें ऐसे अगुवा बनने की जरूरत है जो कार्यों को सौंपते नहीं हैं, बल्कि ऐसे अगुवा हैं जो अधिकार सौंपते हैं।

जब आप अधिकार सौंपते हैं, तो आप जो कर रहे होते हैं वह यह है कि आप किसी को एक अगुवा के रूप में स्थापित कर रहे होते हैं। और विश्वास बनाने की आवश्यकता है क्योंकि आप उन्हें केवल काम नहीं दे रहे हैं। आप उन्हें एक अधिकार सौंप रहे हैं, एक क्षेत्र पर एक जिम्मेदारी जो वहाँ है।

जब हम अगुवाओं की परवरिश करते हैं, तो मैं अक्सर सुनता हूँ कि सेवकाईके अगुवा इस बात से दुखी होते हैं कि उनके साथ काम करने वाले अगुवा बहुत कम हैं। उनके पास बहुत सारे कार्यकर्ता हैं, लेकिन बहुत कम अगुवा हैं। और मैं उन्हें प्रोत्साहित करने की कोशिश करता हूँ, जैसा कि मैं आपको प्रोत्साहित करता हूँ। ऐसा नहीं है कि आप बाहर जाएं और सर्वश्रेष्ठ अगुवाओं को खोजने की कोशिश करें। यह है कि आप अगुवाओं को बढ़ाते हैं, जैसे यीशु ने किया था। लेकिन आपको विश्वास पैदा करके उनका पालन-पोषण करना होगा।

और यह एक निवेश द्वारा किया जाता है, जहाँ आप एक ऐसी जगह पर पहुँच रहे हैं जहाँ आप शिफ्ट करते हैं। और मैं केवल कार्य सौंप नहीं रहा हूँ। अब मैं अधिकार सौंप रहा हूँ। इसलिए मेरे पास केवल अच्छे कर्मचारी नहीं हैं, बल्कि वास्तव में मेरे पास बिल्डर और अगुवा हैं जो दर्शन और सेवकाईका विस्तार करेंगे।

और फिर अंत में, पतरसके साथ यीशु हमें सिखाता है कि विश्वास, यह वास्तव में समय के साथ निरंतरता से निर्मित होता है। पतरसके साथ यीशु के तीन साल थे। कभी-कभी मुझे लगता है कि यह इतना ज्यादा नहीं है कि यीशु के पतरसके साथ तीन साल थे क्योंकि उन्हें सिर्फ पतरसके साथ काम करने की जरूरत थी।

लेकिन उसे पतरस की जरूरत थी कि वह उसे जाने, उस पर भरोसा करे। और पतरसको एक ऐसी जगह पहुँचाने में इतना समय लगा जहाँ उसे यीशु पर यह भरोसा था। विश्वास का निर्माण निरंतरता से होता है। चरित्र में निरंतरता, जहाँ आप समय के साथ बार-बार खुद को साबित करते हैं। या किसी रिश्ते की शुरुआत में, विश्वास की एक छोटी मात्रा हो सकती है। लेकिन जैसा कि आप उनके साथ अपने चरित्र में सुसंगत हैं, वे आपकी बातों पर भरोसा करने लगते हैं।

वे आपके विश्वासों पर भरोसा करने लगते हैं। यह चरित्र में निरंतरता है, लेकिन यह आपकी क्षमता में भी निरंतरता है।

लोग आप पर भरोसा करेंगे और आप विश्वास पैदा करेंगे। जब आप दिखाते हैं कि आप वास्तव में जानते हैं कि आप क्या कर रहे हैं, तो हाँ, हम परमेश्वर की आत्मा पर भरोसा करते हैं, लेकिन उन्होंने हमें एक मन दिया है, उन्होंने हमें एक क्षमता दी है। एक पुरानी कहावत है, "कभी भी कमरे में सबसे चतुर व्यक्ति न बनें ताकि आप हमेशा सीख सकें।" मैं इसे थोड़ा बदलना चाहूँगा और कहना चाहूँगा, कभी-कभी, आपको कमरे में सबसे चतुर व्यक्ति होने की आवश्यकता है। जब आप अपनी दल के साथ होते हैं, तो आपको खड़े होने की आवश्यकता होती है और आपको

दिशा और स्पष्टता देने की आवश्यकता होती है जहां वे देखेंगे, "वाह, वह जानता है, वह जानती है कि वह किस बारे में बात कर रही है।"

एक योग्यता है जिस पर वे भरोसा करते हैं कि आप जानते हैं कि आप क्या कर रहे हैं। यह चरित्र द्वारा निर्मित है, यह योग्यता द्वारा निर्मित है, लेकिन विश्वास एक रसायन विज्ञान द्वारा भी बनाया जाता है जहां आपके पास उनसे जुड़ने के लिए इस तरह की भावनात्मक बुद्धिमत्ता होती है। आपके पास अलग-अलग दल के सदस्य होंगे, इसलिए एक अगुवा के रूप में, आप विभिन्न प्रकार के व्यक्तित्वों से जुड़ने का कौशल सीखते हैं।

विश्वास बनाने के लिए काम करना पड़ता है। सिर्फ जिम्मेदारियाँ सौंपना कहीं अधिक आसान है। केवल कार्यों को सौंपना कहीं अधिक आसान है। विश्वास के बिना परमेश्वर को खुश करना असंभव है। परमेश्वर ने हमारे साथ अपने रिश्ते और उसके साथ हमारे रिश्ते में विश्वास की व्यवस्था बनाई। विश्वास वह है जिस पर त्रिमूर्ति आधारित है। पिता, पुत्र, पवित्र आत्मा, एक दूसरे पर भरोसा करते हुए, एक साथ काम करते हुए। परमेश्वर हमें अगुवाओं के रूप में देखते हैं और वे कहते हैं, "यह व्यवस्था है, मैं चाहता हूँ कि आप अपनी दल के साथ इस तरह काम करें। और बस विश्वास को मापें, उसका निर्माण करें। यह ऐसा है जैसे हर किसी के लिए जो हमारी दल में है, हमारे पास एक विश्वास योजना होनी चाहिए।"

अब सच्चाई यह है कि जब आप इसका अभ्यास करते हैं और आप अनुभव के माध्यम से और संबंधों के माध्यम से और अपने शब्दों के माध्यम से और उनमें निवेश के माध्यम से और समय के साथ निरंतरता के साथ विश्वास का निर्माण कर रहे हैं, जैसे-जैसे आप इसका अभ्यास करते हैं, यह आपके लिए दूसरी प्रकृति बन जाती है। आपको इसके बारे में ज्यादा सोचने की जरूरत नहीं है, यह एक तरह से सहज ज्ञान है। और आप एक ऐसे अगुवा बन जाएंगे जो जानते हैं कि एकता में एक साथ काम करने का सबसे अच्छा तरीका, उस दर्शनको पूरा करने का सबसे अच्छा तरीका जो परमेश्वर ने हमें सेवकाई के लिए दिया है, वह विश्वास है। और एक अगुवा के रूप में मेरी प्राथमिक जिम्मेदारी विश्वास का निर्माण करना है ताकि मैं अपनी दल का नेतृत्व कर सकूँ।

हमारे पास विश्वास की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक यह है कि हम उस योजना के प्रति सच्चे रहें जो परमेश्वर ने दी है, यह विश्वास करते हुए कि वह सफल होगा। यहां तक कि जब यह डरावना होता है, तब भी जब हम इस बात की बात करते हैं कि हम परमेश्वर के प्रावधान को कैसे देखते हैं और समझते हैं, तो हम बदल जाते हैं।

इब्रानियों 11 की आयत 29 में अंतिम विशेषता को देखें। "विश्वास से लोग सूखी भूमि की तरह लाल सागर से गुजरे, लेकिन जब मिस्र के लोगों ने ऐसा करने की कोशिश की, तो वे डूब गए। मूसा ने परमेश्वर के अलौकिक प्रावधान को देखा। उसने देखा कि क्या होने वाला है।

मिस्रवासी, वे डूब गए थे, लेकिन इस्राएलियों को परमेश्वर ने स्वतंत्रता के लिए प्रेरित किया था।

और परमेश्वर ने मूसा के लिए वह सब कुछ प्रदान किया जिसकी मूसा को उसकी दर्शनको पूरा करने के लिए आवश्यकता थी। उन्होंने इसे आवश्यक रूप से उस तरह से प्रदान नहीं किया जिस तरह से मूसा ने सोचा था कि इसे प्रदान किया जाएगा या इसे कब प्रदान किया जाएगा। क्या आप देखते हैं कि हम मूसा की तरह कैसे हैं? हम उसी स्थिति में हैं जहाँ हमारे पास यह दर्शन है और हम इसे आगे बढ़ाना चाहते हैं, लेकिन हमें उस दर्शनके लिए संसाधनों की आवश्यकता है। ईश्वर कैसे प्रदान करता है? और मूसा की कहानी हमें एक बहुत ही ईमानदार विरोधाभास देती है क्योंकि अगर हम वास्तव में अपने साथ ईमानदार हैं, तो हम में से अधिकांश मूसा की तरह बनना चाहते हैं, लेकिन केवल महल में।

हम महल में मूसा की तरह बनना चाहते हैं क्योंकि अगर आप सोचते हैं, "अगर मेरे पास महल होता, महल में, तो मूसा के पास सारी शक्ति होती। उनके शब्द हजारों दासों की आज्ञाएँ थीं। उसके पास सभी संसाधन थे। उसके पास वह सारा पैसा था जो वह कभी भी करना चाहता था जो उसे करने की जरूरत थी। उनके पास पूरा पद था। उनका पूरा प्रभाव था। हम मिस्र के महल में मूसा को देखते हैं, जिसे उस समय दर्शन हुआ था, "इस्राएलियों को मुक्त करो।" और हम कहते हैं, "अगर मेरे पास सिर्फ शक्ति, अधिकार और संसाधन होते, अगर मेरे पास वह होता, तो मैं परमेश्वर द्वारा मुझे दिए गए दर्शन को पूरा कर सकता था।" लेकिन मूसा की कहानी को देखें और आपको पता चलता है कि महल में मूसा असफल रहा।

सारी शक्ति और सारे पैसे, सारे संसाधनों के साथ, उन्होंने वहीं कोशिश की। उसने सिर्फ एक इस्राएली को बचाने की कोशिश की और वह असफल रहा। और परमेश्वर हमें परमेश्वर के प्रदान करने के तरीके के बारे में अपनी सोच में यह बदलाव करने के लिए कह रहे हैं।

मूसा को महल से प्रतिज्ञात भूमि पर जाना पड़ा जहाँ परमेश्वर का अंतिम दर्शन पूरा हुआ। हमें महल से वादा की गई भूमि पर जाना है। हमें इससे बाहर निकलना होगा, "अगर मुझे सिर्फ अधिकार, शक्ति, पैसा मिल सकता है, तो मैं वह दर्शन करूँगा जो परमेश्वर ने मुझे करने के लिए दिया है।"

हमारा विचार गलत है। मूसा के पास गलत विचार था, इसलिए परमेश्वर ने उसे एक प्रक्रिया के माध्यम से नेतृत्व किया। उन्होंने उसे एक मार्ग के माध्यम से नेतृत्व किया जो हमारे लिए निर्गमन अध्याय 3 में दर्ज है जिससे हम अगुवाओं के रूप में सीखते हैं। यहाँ बताया गया है कि परमेश्वर का प्रावधान कैसे आता है और यहाँ हमारे लिए खुद को स्थापित करना महत्वपूर्ण है। यह निर्गमन अध्याय 3 में शुरू होता है। जैसा कि आप कहानी जानते हैं, मूसा जंगल में चला जाता है। वह एक पूर्ण विफलता की तरह महसूस करता है। अब उसके पास कुछ नहीं है।

और फिर भी परमेश्वर ने उन्हें एक दर्शनदी है और परमेश्वर अभी भी उनके साथ काम कर रहे हैं और परमेश्वर निर्गमन अध्याय 3 पद 11 में मूसा का सामना करता है और उसके पास आता है और कहता है, "मैं चाहता हूँ कि तुम दर्शन को पूरा करो।" और यहाँ मूसा कैसे प्रतिक्रिया देता है। तब मूसा ने परमेश्वर से कहा, "मैं कौन हूँ कि फिरौन के पास जाकर इस्राएलियों को मिस्र से निकाल लाऊँ? और परमेश्वर ने उत्तर दिया, "मैं तुम्हारे साथ रहूँगा।"

मूसा समझ में आता है, "मैंने कोशिश की और मैं असफल रहा। ऐसा करने वाला मैं कौन होता हूँ? और कभी-कभी आपके और मेरे मन में एक ही विचार आता है। "मैं ऐसा करने वाला कौन हूँ? मैंने कोशिश की। शायद मैं असफल रहा। " हम देखते हैं कि परमेश्वर ने हमें क्या करने के लिए कहा है और यह हमारी क्षमता से परे है। और पहला संसाधन जो परमेश्वर मूसा को देते हैं, जो सबसे महत्वपूर्ण है, वह उनकी उपस्थिति का संसाधन है। परमेश्वर ने मूसा को प्रोत्साहित करने की कोशिश नहीं की। परमेश्वर मूसा के आत्मसम्मान का निर्माण करने की कोशिश नहीं करता है। वह उनसे ये एक वाक्यांश कहता है, "मैं तुम्हारे साथ रहूँगा।" बहुत बार, हम प्राकृतिक प्रावधान की तलाश कर रहे हैं जो हम यहाँ से शुरू नहीं करते हैं। परमेश्वर ने मुझे जो दर्शनदी है, उसे पूरा करने के लिए मुझे सबसे महत्वपूर्ण संसाधन उनकी उपस्थिति है। और जब मेरे पास उनकी उपस्थिति होगी, तो बाकी सब कुछ अपने आप ठीक हो जाएगा। यह हमारी स्थिति, हमारी मानसिकता और हमारे विश्वास के लिए बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है जब हम उन संसाधनों पर विश्वास करते हैं जिनकी हमें आवश्यकता होती है। पहली बात यह है कि हमें उनकी और उनकी उपस्थिति की आवश्यकता है। लेकिन यह अभी तक पूरा नहीं हुआ है। परमेश्वर और मूसा एक तरह से इस तरह की बातचीत कर रहे हैं। मूसा आयत 13 में फिर से परमेश्वर के पास वापस आता है और उसने विरोध किया, "अगर मैं इस्राएल के लोगों के पास जाऊँगा और उन्हें बताऊँगा, कि तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है, तो वे मुझसे पूछेंगे, उसका नाम क्या है? फिर मैं उन्हें क्या बताऊँ? और परमेश्वर ने मूसा को उत्तर दिया, "मैं वही हूँ जो मैं हूँ। इस्राएल के लोगों से यह कहो, "मुझे तुम्हारे पास भेजा गया है।"

मूसा अब अधिकार का सवाल उठाता है। मुझे अधिकार के संसाधन की आवश्यकता है। अगर मैं इस्राएलियों के पास जाता हूँ, तो मेरे पास उनके साथ कोई अधिकार नहीं है। मैं पहले भी असफल रहा हूँ। मैं अब महल में नहीं हूँ। मेरे पास कोई अधिकार नहीं है। मैं क्या करूँ? और परमेश्वर बहुत स्पष्ट रूप से जवाब देते हैं, "आप कहते हैं, मैं जो हूँ वही हूँ जिसने आपको भेजा है। तुम्हें एक अधिकार इसलिए दिया गया है क्योंकि मैं परमेश्वर हूँ। और यह प्रावधान का दूसरा स्तर है जो हमारे पास आता है। यह सिर्फ उनकी उपस्थिति नहीं है, बल्कि एक अधिकार है जो वह हमें आध्यात्मिक रूप से देता है जिसे हम ले जाते हैं, इस नाम पर लेबल किया गया है, "मैं हूँ", जो एक बहुत ही असामान्य नाम है। लेकिन ईमानदारी से, "मैं हूँ" नाम, यह परमेश्वर के संसाधन के बारे में हमारे हर सवाल का जवाब देता है।

हे परमेश्वर इन बिलों का भुगतान कौन करेगा?

"मैं"। परमेश्वर जब मैं आपकी सेवा में व्यस्त हूँ, तो मेरे परिवार की देखभाल कौन करेगा?

"मैं"।

आपके पास संसाधन के बारे में हर सवाल है,

हे परमेश्वर मुझे सही लोग कैसे मिलेंगे?

"मैं"। वह "मैं हूँ" के साथ जवाब देता है। वह तुम्हारे साथ है। वह सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से आपका संसाधन है। और यही वह मूसा को सिखा रहा है। मूसा को भोजन की आवश्यकता होगी। मूसा को पानी की जरूरत पड़ेगी। मूसा को नेतृत्व की आवश्यकता होगी। इनमें से कुछ भी तब तक नहीं आता जब तक मूसा यह नहीं समझता, "मैं तुम्हारे साथ रहूँगा, और मैं ही ईश्वर हूँ।" बातचीत अभी भी निर्गमन 4, आयत 1 में जारी है। मूसा ने उत्तर दिया, "क्या होगा यदि वे मुझ पर विश्वास न करें या मेरी बात न सुनें और कहें, "यहोवा तुम्हें दिखाई न दिया?"? तब प्रभु ने उससे पूछा, "यह तेरे हाथ में क्या है? एक लाठी से उसने जवाब दिया, और प्रभु ने कहा, "इसे जमीन पर फेंक दो।" तो मूसा लाठी लेता है और वह उसे जमीन पर फेंक देता है, और आप कहानी जानते हैं। वह सांप में बदल जाता है।

परमेश्वर मूल रूप से कह रहे हैं, "मूसा, मैं तुम्हारी हर जरूरत का ध्यान रखूँगा। बस अपने हाथ में जो है उसका उपयोग करें। तुम्हारे हाथ में क्या है? और मूसा एक छड़ी कहता है, और परमेश्वर कहते हैं, "इतना ही काफी है। यह काम करेगा।" जब आप मूसा की कहानी पढ़ते हैं, तो आपको पता चलता है कि उसने उस छड़ी को नीचे फेंक दिया, और वह सांप में बदल गई, और उसने अन्य सभी सांपों को खा लिया।

उन्होंने उस छड़ी को लिया, उसे पानी के ऊपर रख दिया, और पानी अलग हो गया, और वे स्वतंत्रता में चले गए।

जब संसाधन के लिए परमेश्वर पर भरोसा करने की बात आती है, तो परमेश्वर यह कहने से शुरू नहीं करते हैं, "वहाँ देखो, और आप क्या चाहते हैं?" वह यह कहते हुए शुरू करता है, "तुम्हारे हाथ में क्या है? जो आपके हाथ में है,

उससे शुरुआत करें "ओह, तुम्हारे पास कुछ रोटी और कुछ मछलियाँ हैं? ठीक है, वहाँ से शुरू करो। " इतना ही काफी है।

परमेश्वर ने आपको शुरुआत करने के लिए जो कुछ भी दिया है, वही काफी है। क्योंकि कई बार सेवकाई में क्या होता है जब हमारे पास महान दर्शनहोती है, जो शानदार है, हमें उस दर्शनके लिए महान समर्थक दर्शनकी आवश्यकता होती है, और हम तब तक लकवाग्रस्त हो जाते हैं जब तक मुझे वह बड़ी राशि नहीं मिलती, जब तक मुझे सही प्रकार के अगुवा नहीं मिलते, और हम कभी भी विश्वास का पहला कदम नहीं उठाते। तो यीशु कहते हैं, "सुनो, जो मैंने तुम्हें पहले ही दे दिया है उस पर एक नज़र डालो, उस पर ध्यान केंद्रित करो जो तुम्हारे पास पहले से है, न कि उस पर जो तुम्हारे पास नहीं है, और जो तुम्हारे पास है उसे शुरू करने दो उस दर्शनको पूरा करने पर जो मैंने तुम्हें दी है। फिर आप देखेंगे कि आपके पास अतिरिक्त संसाधन आने लगेंगे। मूसा फिर से परमेश्वर के पास वापस आता है, और वह अपनी सीमाओं को देखता है, लेकिन मैं हकलाता हूँ। मैं बोल नहीं सकता। और निर्गमन 4 की आयत 14 में,

परमेश्वर कहते हैं, "हारून आपसे मिलने जा रहा है, और हम आपको देखकर खुश होंगे।" वह कह रहा है, "मूसा, मैं तुम्हें लोगों का भरण-पोषण करने जा रहा हूँ। यह काम आपको अकेले नहीं करना है। कभी-कभी सेवकाई में, विशेष रूप से अगुवाओं के रूप में, हम खुद को अकेला महसूस करते हैं, और हम उसका बोझ उठाते हैं। और जब हम परमेश्वर के संसाधन के बारे में सोचते हैं, तो हम आम तौर पर लोगों के संदर्भ में नहीं, बल्कि कार्यक्रम या वित्त या भवनों के संदर्भ में सोचते हैं।

और फिर, प्राथमिकता? परमेश्वर कहते हैं, "मैं तुम्हारे साथ रहूँगा। मैं तुम्हें अपना अधिकार दूँगा, और मैं आपको लोग दूँगा। परमेश्वर ने मूसा से भोजन या पानी या रसद के बारे में कुछ नहीं कहा है। उन्होंने अपने और लोगों के बारे में बात की है। "हारून, तुझे देखकर कौन खुश होगा? जब हमें आवश्यक संसाधनों की बात आती है तो अगुवाओं के रूप में हमारे लिए बाइबल में सबसे महत्वपूर्ण छंदों में से एक है, "प्रभु से फसल की प्रार्थना करें कि वह श्रमिकों को भेजे।"

और आप अपने हारून के लिए प्रार्थना करते हैं, और परमेश्वर उसे बचाता है? हम अक्सर सोचते हैं, "वाह, अगर मैं सिर्फ महल में होता, तो मेरे पास सभी नौकर, सभी गुलाम, सभी पैसे, सभी अधिकार होते। यही मैं चाहता हूँ। " और अगर आप ईमानदार हैं, जैसा कि आप मेरी बात सुन रहे हैं, तो आप जानते हैं कि कभी-कभी आप उस मानसिकता में आ जाते हैं। और उनकी दर्शनके लिए परमेश्वर का प्रावधान आपके लिए लाखों डॉलर खोलने की कोई गुप्त कुंजी नहीं है।

यह मूसा के मॉडल के माध्यम से अपनी मानसिकता और अपने विश्वास को बदलने के बारे में है, और कहता है, "नहीं, मैं महल और प्राकृतिक परिस्थितियों पर भरोसा नहीं करने जा रहा हूँ। मैं क्रॉसवे से होकर जा रहा हूँ, और मैं प्रॉमिस्ट लैंड तक पहुँचने जा रहा हूँ। और मुझे जो प्रावधान चाहिए वह यह है, "मैं तुम्हारे साथ रहूँगा।" मुझे किसी भी चीज़ से अधिक जिस प्रावधान की आवश्यकता है, वह यह है कि परमेश्वर कह रहे हैं, "मैं आपको अपना अधिकार दे रहा हूँ।"

मुझे किसी भी चीज़ से अधिक एक हारून की आवश्यकता है जो मेरे साथ ले जाएगा। मूसा बदल गया। कहानी इसे बहुत स्पष्ट रूप से दर्ज करती है। वह महल में गया और शुरू किया, लेकिन इस रास्ते से, वह परमेश्वर के संसाधन पर ऐसी निर्भरता के स्थान पर पहुँच गया। यह वास्तव में हमारे लिए निर्गमन अध्याय 33 में चित्रित किया गया है,

जहाँ मूसा स्वयं परिवर्तित हो गया है। आयत 15 में, यहाँ मूसा परमेश्वर से क्या कहता है, "यदि आपकी उपस्थिति हमारे साथ नहीं जाती है, तो हमें यहाँ से न भेजें। जब तक आप हमारे साथ नहीं जाते, किसी को कैसे पता चलेगा कि आप मुझसे और अपने लोगों से खुश हैं? मुझे और आपके लोगों को अन्य सभी लोगों से और क्या अलग करेगा

तब यहोवा ने मूसा से कहा, जो कुछ तू ने चाहा है, मैं वैसा ही करूँगा, क्योंकि मैं तुझ से प्रसन्न हूँ और तुझे अपने नाम से जानता हूँ। मूसा परिवर्तित हो गया था। वह महल से निकला, "मुझे यह परमेश्वर के लिए करना है। मुझे संसाधनों की आवश्यकता है। अगर परमेश्वर मेरे साथ नहीं हैं, तो मैं ऐसा करना भी नहीं चाहता, क्योंकि लोग परमेश्वर को कैसे देखेंगे? मूसा जानता था कि उसकी पहचान अब केवल परमेश्वर की महिमा करने का एक प्रतिबिंब थी। "मुझे पता है कि आपके पास एक महान दर्शन है, और मुझे पता है कि उस दर्शनके लिए संसाधनों की आवश्यकता है।

सुनिश्चित करें कि आप महल में हाथापाई के प्रलोभन में न पड़ें, बल्कि अपने आप को मूसा की तरह यीशु के चरणों में रखें। और विश्वास करें और जान लें कि आपका जीवन और आपकी सेवकाई उसे महिमा देने के लिए है, इसलिए परमेश्वर इसे कुछ अनूठे तरीकों से करने जा रहे हैं। और जो मायने रखता है वह यह है कि आपका उस ईश्वर में विश्वास है जो कहता है, "मैं तुम्हारे साथ रहूँगा।" जो आपके हाथ में है उसे लें और दर्शनको पूरा करना शुरू करें, और मुझे सही समय पर चरण-दर-चरण शेष लाते हुए देखें जहाँ परमेश्वर को महिमा मिलती है।